ISSN – 2277-7911
Impact Factor – 5.519

YOUNG RESEARCHER
A Multidisciplinary Peer-Reviewed Refereed Research Journal

December - 2024
Vol. 13
Special Issue
No. 1

हिंदी साहित्य में आदिवासी जीवन का चित्रण

त्रिवेणी विश्वजीत जाधव

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग प्रमुख

डॉ. डी. वाय. पाटील कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, आकुर्डी, पुणे - 411044.

***Corresponding Author:* त्रिवेणी विश्वजीत जाधव**

DOI - 10.5281/zenodo.14566891

शोध प्रारूप:

इस शोध पत्र का उदेश्य साहित्य के माध्यम से आदिवासी समाज की संस्कृति को दर्शाती है| आदिवासी स्त्री कीअस्मिता की खोज और आदिवासी स्त्री पर हो रहे अन्याय अत्याचार के खिलाफ लड़ने का प्रतिरोध साहित्य रचनाये है वह एक छोटी प्रस्तुति है | यह शोध पत्र आदिवासी जीवन का हिंदी साहित्य के माध्यम से विश्लेषित करने का प्रयास करता है |आदिवासी जीवन अलग अलग उपन्यास ,कहानी ,काव्य के माध्यम से प्रस्तुत करता है |आदिवासी जीवन को साहित्य के माध्यम से सामाजिक सरचना जैसे की संस्कृति, भाषा, नृत्य, कला, संगीत को चित्रित किया है | साहित्य के पात्र के माध्यम से सामाजिक, राजनैतिक परिस्थितिका का वर्णन किया है |उसके साथ ही नारी विमर्श को प्रस्तुत करने की कोशिश की है | हिंदी साहित्य में अलग अलग प्रकार की आदिवासी जमात का चित्रण किया है |आदिवासी समाज की समस्याओ का समाधान निर्देशित करने का कार्य हिंदी साहित्य के माध्यम से किया गया है |इस शोध पत्र में आदिवासी समाज की समस्याओ के खिलाफ लड़ने का कार्य हिंदी साहित्य के माध्यम से दिखाया गया जो की समाज को आधुनिकीकरण की ओर ले जा रहा है |आदिवासी समाज की विकट स्थिति को समकालीन उपन्यास के माध्यम से सामने लाने का प्रयास करने की कोशिश की है

मुख्य शब्द- भाषा, पारपरिक जीवन, संस्कृति, आदिवासी समाज, हिंदी साहित्य, संगीत, नृत्य, आधुनिकीकरण

प्रस्तावना:

आदिवासी शब्द दो शब्दों आदि से मिल कर बना है और वासी से मिलकर बना है |इसका मूल अर्थ मूल निवासी होता है | पुरातन लेखो में आदिवासियों को अत्विका और वनवासी भी कहा गया ही |(संस्कृत ग्रंथो में) सविधान में आदिवासियों के लिए अनुसूचित जनजाति पद का उपयोग किया गया है | भारत के प्रमुख आदिवासी समुदायों में गोंड, मुंडा, खड़िया, हो, बोडो, भील, खासी, सहरिया, गरासिया संथाल, मीणा, उरांव, परधान, बिरहोर, पारधी, आंध, टाकणकार आदि है|

क्रोबर के अनुसार -"आदिम जनजातियाँ ऐसे लोगो का एक समूह होता है ,जिनकी अपनी एक संस्कृति होती है |"

महात्मा गाधी - ने आदिवासी को गिरिजन (पहाड़ पर रहने वाले लोग) कह कर पुकारा है |

आदिवासी उन्हें कहते है की जो सभ्य जगत से दूर पर्वतो और जंगलो में दुर्गम स्थानों पर निवास करते है | समान जनजाति बोली का प्रयोग करते है |अधिकांश लोग मांस भक्षी खाते है और अर्ध नग्न अवस्था में रहते है | आदिवासी साहित्य, आदिवासियों के जीवन और समाज को उनके दर्शन के मुताबिक अभिव्यक्त करने वाला साहित्य है|

आदिवासी साहित्य से तात्पर्य उस साहित्य से है जिसमें आदिवासियों का जीवन और समाज उनके दर्शन के अनुरूप अभिव्यक्त हुआ हो। आदिवासी साहित्य को विभिन्न जगहों पर विभिन्न नामों से जाना जाता है।

आदिवासी साहित्य, आदिवासियों के जीवन और समाज को उनके दर्शन के मुताबिक अभिव्यक्त करने वाला साहित्य है.| आदिवासी साहित्य में आदिवासियों के जीवन और समाज के साथ-साथ उनके दर्शन, परंपरा, रीति-रिवाज, और लोकगीतों को भी दिखाया जाता है.|आदिवासी साहित्य का मकसद, आदिवासियों के अधिकारों का सम्मान करना और प्रकृति और मनुष्य के बीच संतुलन बनाए रखना होता है| आदिवासी साहित्य में आदिवासियों के जीवन की समस्याओं को सामने लाया जाता है.| आदिवासी साहित्य में आदिवासियों के अस्मितावाद और प्रतिरोध को दिखाया जाता है.| आदिवासी साहित्य में आदिवासियों के जल, जंगल, और ज़मीन से जुड़े उनके अधिकारों की मांग की जाती| आदिवासी साहित्य में आदिवासियों के पारंपरिक ज्ञान को भी दिखाया जाता है| आदिवासी साहित्य से तात्पर्य उस साहित्य से है जिसमें आदिवासियों का जीवन और समाज उनके दर्शन के समकालीन हिंदी कथा–साहित्य में आदिवासी जीवन को भी सर्जन का विषय बनाया गया ।आदिवासी जीवन तथा समाज को समझने के लिए आवश्यक है ,उनके वाचिक साहित्य को समझना जो सदियों से पीढ़ी–दर– पीढ़ी लोकगीतों, लोक–कथा, लोक–नृत्य, शौर्य–गाथाओं में भरा पड़ा है । उनकी स्वच्छन्द सामूहिक जीवन–शैली, उनकी परंपरा, रीति–रिवाज, प्रथाएं इत्यादि आज के हमारे स्वार्थपूर्ण तथा विकृत मानसिकता वाले समय तथा समाज के समक्ष एक शोध का विषय है आदिवासी साहित्य को विभिन्न जगहों पर विभिन्न नामों से जाना जाता है।

उद्देश्य:

१. इस शोध के माध्यम से आदिवासी जीवन की संस्कृति को प्रस्तुत करने की कोशिश करना |
२. हिंदी साहित्य में आदीवासी लोगो की सामाजिक आर्थिक राजनैतिक परिस्थिति का अध्ययन करना |
३. हिंदी साहित्य में समकालीन उपन्यास कहानी के माध्यम से आदिवासी जीवन के साहित्यिक पहलुओं का अध्ययन करना |
४. साहित्य के माध्यम से आदिवासी समाज की समस्याओ और चुनोतियो क़ो प्रस्तुत करना |
५. आदिवासी शोषित,उत्पीड़ित और शोषक वर्ग के संघर्ष की साहित्य के माध्यम से जानकारी देना |

शोध पद्धति :

प्रस्तुत शोध निबध के लिए वर्णनात्मक पद्धति का आधार लिया गया है | इसमें विश्लेषणात्मक पद्धति उपयोग में लायी है |प्रस्तुत शोध निबंध में ग्रंथालय पद्धति का प्रयोग किया गया |

उपन्यास, कहानी में आदिवासी जीवन:

रमणिका गुप्ता ,संजीव ,मैत्रीय पुष्पा, मधु कांकरिया, महाश्वेता देवी जैसे उपन्यासकारो ने अपने उपन्यास के माध्यम से उनके जीवन की समस्याओ को चित्रित किया है |

हिंदी लेखक संजीव रचित जंगल जहा शुरू होता है -इस उपन्यास के माध्यम से भारत नेपाल सिमा पर स्थित घने वनो में रहनेवाले थारू नाम की आदिवासियों का चित्रण किया है |थारू नाम के लोगो ने अंग्रजो की गुलामी को स्वीकार नहीं किया इसलिए अंग्रजो ने लोगो को डाकू चोर आदिवासी बना दिया है |

रमणिका गुप्ता: द्वारा लिखित कहानी संग्रह बहु जूठाई "के द्वारा महिला को केंद्रबिंदु माना है | इस उपन्यास के माध्यम से महिला को केंद्रित किया है| महिला विपरीत परिस्थिति में खुद की अस्मिता बनाये रखने की कोशिश करती है |समाज की विकृतिया झेलती है लेकिन कभी थकती नहीं है |वह खुद के शर्तो पर जीती है | झारखण्ड के छोटा नागपुर की जंगल में रहने वाली महिलाओ ने कभी रेलगाड़ी देखीं नहीं है |

संस्कृति में आई विकृति के कारन समाज का ऱ्हास होता जा रहा है |संस्कृति में आई विकृति के कारन समाज कमजोर होता गया |आदिवासियों की व्यथा का वर्णन किया है |

महाश्वेता –अग्निगर्भ: महाश्वेता ने लिखित अग्निगर्भ उपन्यास में अग्निगर्भ का संथाल किसान बसाई टुडू किसान संघर्ष में मरता है |लाश जलने के बावजूद उसके फिर सक्रिय होने की खबर आती है |बसाई फिर मारा जाता है |वहअग्निबीज है और अग्निगर्भ है सामंती कृषि व्यवस्था है | इस उपन्यास में भूमिहीन किसानों का चित्रण किया है |आधुनिक इतिहास के हर पर्व में विद्रोह का प्रयास उनके प्रति दूसरे वर्ग के शोषण के चरित्र को प्रकट करता है | जो अब तक अपरिवर्तनीय बना हुआ है |

मैत्रीय पुष्पा-झूलानट: अनपढ़ नारी के स्त्री शक्ति शीलो की अदम्य कहानी है| इस उपन्यास में पुरुष अन्धविश्वास के बारे में बताया है| बालकिशन एक अंधविश्वासी पुरुष है जो हर काम के लिए व्रत ,उपवास ,तप करता है |जब शीलो उसे रोकती है ,तो वह सोचता है भाड़ में गई शीलो|आदिवासी समाज में औरतो को मारना पीटना आम बात है | वह पुरुषो का अन्याय सहती है |बालकिशन शीलो को मारता -पीटता है |अपनी अम्मा को गाली देने पर शीलो को दो -तीन तमाचे जड़ दिए पूरी हिम्मत के साथ उससे पता चलता है की औरतो को समाज में कितनी इज्जत है|

डॉ .रमणिका गुप्ता-सीता –मौसी: सीता और मौसी एक उपन्यास न होकर अलग अलग उपन्यास है | आदिवासी समाज का दोनों कैसे शिकार होती है इसके के बारे में बताया है |यह उपन्यास आदिवासी अंचल का है | यह धीरे धीरे यह संस्कृति बदलकर औदयोगिक परिवेश में बदल जाती है |कोयला खदानों में कोयला ढोने का काम कर रही है | जहाँ आदिवासी संस्कृति खत्म होती जा रही है|आदिवासी समाज मजबूरी में मजदूर बनाने में

विवश हो जाता है | इनकी जमीनों को बाहरी लोगो और सरकार ने हड़पना शुरू किया |आदिवासी औरते अपनी अस्मिता बचाने में जूझ रही है | कोयला खदानों में कोयला ढोने का काम कर रही है | आदिवासी महिलाओ का सबसे ज्यादा शोषण किया जाता है वह गैर आदिवासी द्वारा किया जाता है | सीता उसी शोषण का शिकार हुई है | मौसी एक ऐसी नायिका के रूप में उभरकर सामने आई है जो जीवन में खुद की अस्मिता बचाने के लिए संघर्ष करती रहती है |मौसी "उपन्यास में आदिवासी समाज का बखूबी चित्रण किया है| आदिवासियों की विषेशता बताई है |आदिवासी समाज के शोषण का चित्रण किया है | मजदुर वर्ग की जिजीविषा का चित्रण किया है|

सीता और मौसी उपन्यास की दोनों महिलाये समाज में अपनी नई पहचान बनाती है |पुरुष वादी समाज में जिन्दा रहने के लिए संघर्ष करती रहती है |

मधु कांकरिया: खुले गगन में लाल सितारे -इस उपन्यास के माध्यम से नक्सलवाद को उबारा गया है |नक्सलबाड़ी में हो रहे शोषण का वर्णन रोचक ढंग से किया है | यह नक्सलवादी भावना से ओतप्रोत है युवाओ को नक्सलवादी बनाने की भावना को बया किया है |नक्सलवादियोंको बिना वजह जेल में बंद कर दिया जाता है और विभिन्न प्रकार की यातनाये दी जाती है | जिसके कारन उनकी मौत भी हों जाती है लेकिन पुलिस के पास कोई जवाब नहीं है |गोविंदा ने जेल में दी गई यातनाओ का वर्णन किया है |

गरीबी और अशिक्षा के कारण अपना धर्म छोड़ रहे है और मिशनरी बन रहे है |मिडिया का महत्वपूर्ण रोल अदा किया है |सरकार जिसे उग्रवादी कहती है मिडिया उसे साबित कर देती है |मिडिया नक्षलवाड़ी की जो छवि बताता है उसे जनता सच मानती है |बिना अरेस्ट वारंट बिना चार्ज शिट से घर में घुस जाना और बाल पकड़कर बाहर निकालना | नक्षलवादियो द्वारा बम्ब फोड़ना और आत्मरक्षा के लिए उसे मारना जैसे रिवाज बन चूका है |

इस उपन्यास के माध्यम से मधु कांकरिया ने दक्षिण बिहार के आदिवासियों की व्थथा का चित्रण किया है |

महाश्वेता देवी -जंगल के दावेदार: बंगला उपन्यास अरण्येक अधिकारी का हिंदी अनुवाद है | बिहार के विभिन्न जिलों के जंगलो में रहने वाले आदिवासियों का संजीव चित्रण किया गया है |बिहार के आदिवासियों की मुंडा आदिवासियों के लोकगीतो, उनकी जिजीविषा ,जीवनमूल्य ,अशिक्षा ,अंधविश्वासों का जिवंत चित्रण किया गया है | मुंडा आदिवासियों की गरीबी का चित्रण किया है |बिरसा किसी अन्धविश्वास को नहीं मानता था | वह नये ज़माने के हिसाब से चलना चाहता था | वह सभी मुंडाओं को शिक्षित देखना चाहता है |इस उपन्यास का नायक आधुनिक समाज का निर्माण करना चाहता था |

इस उपन्यास में अजनी काकी जैसी महिलाये जो पंचायत में जाना मना है लेकिन फिर भी वह जाती है , बोलती है यह परिवर्तन इस समाज में देखा गया है |अंजनी काकी महिला के द्वारा सहरिया के सोच में परिवर्तन बताया है |

अल्मा कबूतरी - मैत्रीय पुष्पा: अल्मा कबूतरी मैत्रीय पुष्पा द्वारा लिखित उपन्यास में मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड में बसनेवाले जरायमपेशा

खानाबदोश कबूतरा आदिवासी यो की उपेक्षित तिरस्कृत अपमानित प्रताड़ित महिला का चित्रण किया है|

इसमें तीन प्रमुख महिला है कदम बाई, भूरी बाई, अल्मा की माध्यम से इस जाती की औरतो को सघर्षमय जीवन और शोषित जीवन का वर्णन किया है |कबूतरों की लड़ाई आज भी जारी है |

जो इतिहास में नहीं है -राकेश कुमार सिंह: इस उपन्यास के माध्यम से आदिवासी जनजाति का परिचय दिया है| हूल आंदोलन से सबंधित यह कथानक है |आदिवासी समाज में फैले अन्धविश्वास को न मानने वाले है |वह हर बात को वैद्यानिक तरीके से सोचता है और अपना तर्क देता है |हरियल मुरुम इस बात से कभी सहमत नहीं हो पता था की हाड़ मांस का कोई मनुष्य है |मुखिया की बेटी लाली और हरियाल विवाह नहीं कर पाते क्योकि वह दोनों अलग अलग जाती के है |इस उपन्यास में लोकगीत, लोककथा, लोकपर्व, अन्धविश्वास, रीतिरिवाज धर्म विश्वास का पता चलता है |

आदिवासी के लोगपर्व का वर्णन किया है |उसके साथ ही आखेट कब किया जाता है यह भी बताया है |

इस उपन्यास के माध्यम से महिला को केंद्रित किया है| महिला विपरीत परिस्थिति में खुद की अस्मिता बनाये रखने की कोशिश करती है |समाज की विकृतिया झेलती है लेकिन कभी थकती नहीं है |वह खुद के शर्तो पर जीती है |झारखण्ड के छोटा नागपुर की जंगल में रहने वाली महिलाओ ने कभी रेलगाड़ी देखीं नहीं है |

संस्कृति में आई विकृति के कारन समाज का ऱ्हास होता जा रहा है |संस्कृति में आई विकृति के कारन समाज कमजोर होता गया |आदिवासियों की व्यथा का वर्णन किया है |

इतवा मुंडा ने लड़ाई जीती -महाश्वेता देवी: इस कहानी में मुंडा आदिवासियों के संघर्ष का वर्णन किया है |एक छोटा बच्चा है इसके माता पिता की मृत्यु हो जाती है |दादा मंगल उसका पालन पोषण करते है |उसे पढ़ा- लिखाकर अच्छा इन्सान बनना चाहते है |

इस कहानी के माध्यम से मुंडा आदिवासियों का जीवन चित्रण किया है |मुंडा लोगो में दहेज़ की प्रथा नहीं है | बल्कि दुल्हेवाले दुल्हन के घरवालों को पैसा देते है | आदिवासीयो के पास जमींन नहीं है इसलिए वह अपनी पेट के आगे विवश है| इसलिए वह अपने बच्चो को पढ़ा नहीं पाते |लेकिन मंगल इतवा को पढ़ाना चाहता है |लेकिन उसके जैसे लोग परिस्थिति के आगे विवश है | सारे संघर्ष को झेलते हुए मंगल इतवा को पढ़ाने ने भेजता है | इस कहानी में मुंडाओं के लोगगीतो ,लोगपर्व ,धार्मिक विश्वास ,लोगकथा के पर्व का वर्णनं किया है |

सपनो से बाहर -विणा सिन्हा: सपनो से बाहर, यह उपन्यास विणा सिन्हा ने चिकित्सा जैसे विषय पर लिखा है |इस उपन्यास में लमाना जाती के अंधविश्वास ,परम्परा ,पहनावा के चित्रण किया गया है |शिक्षा के आभाव में यह लोग अंधविश्वास से घिरे हुए है |जयदीप एक ईमानदार डॉक्टर है उसका तबादला रैपुर गांव में हुआ है वहाँ के लोग अभाओ में अपना जीवन गुजार रहे है |नक्सलवाद की समस्या से जूझते ये लोग आधारभूत सुविधाओं से वंचित है |

उस गांव के अस्पताल में पहुंचते ही जयदीप समझता है, की एक औरत बैठी हुई है |फटे हुए कपडे माथे पर आंचल लिए दो चार बच्चो को लेकर बैठी हुई है |उससे उनकी अभावग्रस्तता का पता चलता है |

निष्कर्ष:

इस शोध पत्र के माध्यम से निष्कर्ष निकाला जाता है, की वर्णभेद, जातिभेद, बाहरी आक्रमण के कारण लोग खुद की प्रगति नहीं कर सकते |सदियों से दूर पहाड़ो में और जंगलो में रहने के कारण पिछड़े हुए है | लोगो में एक प्रकार के पिछड़ेपन के कारण खुद सभ्य लोगो से दूर है |आदिवासी समाज सदियों से अक्षरज्ञान से दूर होने के कारण प्रगतिशील समाज से दूर है | साहित्य के माध्यम से आदिवासी समाज की संस्कृति का पता चलता है |

आदिवासी साहीत्य से अनुभव मिलता है, की सभ्य समाज के द्व्राराआदिवासी समाज कुचला जाता है | उनके द्वारा उपेक्षित और तिरस्कृत है | उनके जीवन से जुड़ी समस्याओ के कारण आदिवासी समाज को से प्रगतिशील समाज से परिचित करने का प्रयास लेखकों ने किया है | कहानीकार उपन्यासकारों ने उनके जीवन की बारीकियों को निरिक्षण करके उनकी कलाओ को उद्घाटित किया है | साहित्य के माध्यम से आदिवासी समाज के सामने अनेक प्रकार की चुनोतियाँ का चित्रण किया गया है | जो समकालीन हिंदी साहित्य है उसमे आदिवासी अस्मिता की पहचान करने में महत्वपूर्व भूमिका निभाती है|

सन्दर्भ ग्रंथ:

१) मैत्रेयी पुष्पा ,अल्मा कबूतरी २०११राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली
२) संजीव जंगल जहाँ शुरू होता २०१० राधाकृष्ण पेपर बैंक्स ,नई दिल्ली
३) मैत्रेयी पुष्पा झुलानट(१९९९)राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
४) मधु कांकरिया ,खुले गगन के लाल सितारे २०११किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली
५) पुन्नी सिंह ,सहराना२०१२ग्रंथकेतन, दिल्ली
६) विणा सिन्हा ,सपनो से बाहर २००३मेधा बुक्स ,दिल्ली
७)रमणिका गुप्ता ,सीता मौसी २०१० ज्योति लोक प्रकाशन, दिल्ली